३. अध्याय तृतीय:
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

३.१. प्रस्तावना

३.२. शोध प्रविधि

३.३. प्रयुक्त चर

३.४. न्यादर्श का चयन

३.५. उपकरण का निर्माण

३.६. प्रदतों का संकलन

3.1. प्रस्तावना :

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी स्वरूप का विश्वसनिय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, जांच करना, गहन निरीक्षण करना, योजनाबद्ध अध्ययन, व्यापक परीक्षण और तात्पर्य युक्त उद्देश्य सामान्यीकरण प्रक्रिया सन्निहित होता है। पी. वी. यंक के शब्दों में–

"अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिन के द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टी की जाती है तथा उनके उन अनुक्रमों, पारस्परिक संबंधों, कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है, जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।

3.2. शोध प्रविधि :

किसी भी शोध कार्य में यह संभव नहीं हो पाता कि सभी लक्ष्यगत समष्टि को अध्ययन में शामिल किया जाएं अतः समष्टि की समस्त इकाईयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों को एक निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाता है। उन संकलित इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है। इन न्यादर्श के आधार पर ही अध्ययन निष्कर्ष घटित होते है।

"प्रतिदर्श या न्यादर्श एक समष्टि का वह अंश होता है जिस में अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।"

- इंग्लिश और इंग्लिश के अनुसार –

"जनसंख्या का एक मात्र अंश है जो दिए हुए उद्देश्य के लिए संपूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व होता है। इसलिए न्यादर्श पर आधारित निष्कर्ष संपूर्ण जाति के लिए होता है।"

3.3. प्रयुक्त चर :

गैरेट(1967) के अनुसार – चर वह लक्षण या गुण है जिसकी मात्रा में परिणाम होता है और यह परिवर्तन किसी मात्रा या आयाम पर होता है।"

- **स्वतंत्र चर :**

साधारणतः शोधकर्ता जिस कारक के प्रभाव के अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण होता है उसे स्वतंत्र चर कहते है। प्रस्तुत अध्ययन के स्वतंत्र चर है–

1. **गुजराती भाषी छात्र।**

- **आश्रित चर :**

स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तन होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है उसे आश्रित चर कहते है। प्रस्तुत अध्ययन के आश्रित चर है–

1. **हिंदी सीखने की समस्या।**

3.4. न्यादर्श का चयन :

शोधकर्ता के द्वारा न्यादर्श की इकाईयों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया न्यादर्श उस संपूर्ण जनसंख्या या समष्टि का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह न्यादर्श चुना गया है। चुना गया न्यादर्श जब तक संपूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधि नहीं होता है तब तक न्यादर्श के अध्ययन से प्राप्त परिणाम वैध और विश्वसनीय नहीं होते है।

- न्यादर्श को परिभाषित करते हुए श्रीवास्तव. डॉ. डी. एन. ने कहा है कि –

"व्यक्तियों या वस्तुओं के विस्तृत समूह का एक छोटे आकार का प्रतिनिधि ही न्यादर्श है जिसके आधार पर संपूर्ण जनसंख्या के लिए विश्वसनीय और वैद्य निष्कर्ष निकाले जाते है।"

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श के लिए गुजरात के अहमदाबाद शहर की एक और भावनगर जिले की दो विद्यालयों से, कक्षा 8 के कुल 150 छात्रों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श चयन किया गया।

- शोध के न्यादर्श की विशेषताएं निम्नलिखित हैं–
  1. इस शोधकार्य के लिए एक शहरी और दो ग्रामीण विद्यालयों का चयन किया गया।
  2. न्यादर्श के लिए पसंद की गई विद्यालयों में से दो विद्यालय छात्रावासी एवं एक विद्यालय गैर छात्रावासी हैं।
  3. न्यादर्श के चयन में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि न्यादर्श गुजरात के विस्तृत क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करें।
  4. न्यादर्श के रुप में कक्षा–8 के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

उपर्युक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श का चयन का विवरण निम्न तालिका में प्रस्तुत है–

क्रम	विद्यालय का नाम	विद्यालय के प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या
1	कुमार विनय मंदिर, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद–14.	शहरी, छात्रावासी	27
2	श्रीमती एन. एच. डांखरा उत्तर बुनियादी विद्यालय, बेला, जिला : भावनगर	ग्रामीण, छात्रावासी	78
3	श्री खोडीयार विद्यालय, गरीबपुरा, जिला : भावनगर	ग्रामिण, गैर छात्रावासी	45
योग			150

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात के नौं जिले– भावनगर, अहमदाबाद, सुरेन्द्रनगर, सुरत, बनासकाठा, साबरकाठा, व्यारा, राजकोट, तापी के 61 गांव के न्यादर्श का समावेश हुआ हैं।

3.5. उपकरण का निर्माण :

किसी भी शोधकार्य के हेतु आंकड़े एकत्र करने के लिए उचित उपकरण का चयन अति महत्वपूर्ण होता हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा निर्मित, गुजराती भाषी विद्यार्थियों की हिंदी भाषा प्रयोग में उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियों के परीक्षण हेतू प्रश्नावली निर्माण की गयी; जिससे कि गुजराती भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याएँ सामने आ सकें।

प्रयुक्त परीक्षण को निर्माण में टॉ. रामकृपाल कुमार द्वारा, "नागा भाषा–भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याएं" पर किया गया शोधकार्य में प्रयुक्त प्रश्नावलीओं का आधार लिया तथा मार्गदर्शक डॉ. रत्नमाला आर्य, हिन्दी पढ़ाने वाले शिक्षकों एवं हिन्दी भाषा विशेषज्ञ– डॉ. राम गोपाल सिंह (गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के हिंदी विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक तथा अध्यक्ष, अखिल भारतीय अनुवाद परिषद एवं अखिल भारतीय हिंदी भाषा–साहित्य–शोध परिषद) और डॉ. कांतिभाई परमार (प्राचार्य, हिंदी शिक्षक महाविद्यालय, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद) के निर्देशन के अनुसार अपेक्षित परिवर्तन करके प्रमाणित करने का प्रयास किया गया हैं।

परीक्षण का विवरण निम्नलिखित है :

(1) उच्चारणिक परीक्षण,

(2) व्याकरणि परीक्षण और

(3) वर्तनीगत परीक्षण।

3.6. प्रदतों का संकलन :

परीक्षण पूर्णरुपेण तैयार हो जाने के बाद प्रदत संकंलन हेतु विद्यालयों के प्राचार्यों से अनुमति ली गई और उससे तारीख व समय निर्धारित किया गया। निर्धारित दिनों में विद्यालयों में जाकर कक्षा–8 के विद्यार्थियों का परीक्षण किया गया।

- परीक्षण का प्रशासन :

परीक्षण शुरू करने से पहले निम्नलिखित निर्देश दिए गए –

1. कृपया अपने–अपने स्थान पर बैठ जाइएं।
2. अपने पास केवल पेन रखें।
3. उपयुक्त स्थान पर अपना नाम, जन्मतिथि, कक्षा, मातृभाषा, विद्यालय का नाम, जिला, विद्यार्थी के गांव का नाम (जहाँ वे पले हैं), जिला(गांव का जिला), पिता का नाम, पिता का व्यवसाय, माँ का व्यवसाय और दिनांक आदि लिखें।
4. उत्तर लिखते समय नकल न करें।